तुलसीदास **की भक्ति-भावना**

**पुष्पा महाराज,हिन्दी विभाग**

**सेमेस्टर 2(MJC)**

हिंदी साहित्य के भक्ति काल में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। वे न केवल एक महान कवि थे, बल्कि एक गहरे भक्त, समाज सुधारक और लोकमंगल के साधक भी थे। उनकी भक्ति-भावना ने भारतीय जनमानस को सदियों तक प्रभावित किया है। तुलसीदास की भक्ति किसी एक संप्रदाय या दार्शनिक सीमाओं में बंधी नहीं है, बल्कि वह लोकजीवन से जुड़ी, सरल, सहज और करुणा से परिपूर्ण भक्ति है। उनके काव्य में भक्ति, प्रेम, श्रद्धा, दया और नैतिकता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

तुलसीदास **का जीवन और भक्ति की पृष्ठभूमि**

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 16वीं शताब्दी में माना जाता है। उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा। बचपन में माता-पिता का वियोग, गरीबी और उपेक्षा ने उनके मन को भीतर तक झकझोर दिया। विवाह के बाद पत्नी रत्नावली द्वारा दिए गए उपदेश ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। इसी घटना के बाद तुलसीदास का मन संसार से हटकर ईश्वर-भक्ति की ओर पूर्णतः उन्मुख हो गया। यही जीवनानुभव उनकी भक्ति-भावना को और अधिक गहराई प्रदान करता है।

राम**-भक्ति का स्वरूप**

तुलसीदास की भक्ति का केंद्र **श्रीराम** हैं। वे राम को केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक पुरुष नहीं, बल्कि सगुण, साकार और करुणामय ईश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं। तुलसीदास की राम-भक्ति **सगुण भक्ति** की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। उनके राम आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श राजा और आदर्श मानव हैं।

राम के प्रति उनकी भक्ति दास्य, वात्सल्य और सख्य—तीनों भावों से युक्त है। वे स्वयं को राम का दास मानते हैं—

> “मैं सेवक हूँ राम का, स्वामी कृपालु।”
>
> इस दास्य भाव में अहंकार का पूर्ण अभाव है और पूर्ण समर्पण की भावना है।

भक्ति **में प्रेम और करुणा**

तुलसीदास की भक्ति केवल पूजा-पाठ या कर्मकांड तक सीमित नहीं है, बल्कि वह प्रेम और करुणा से भरी हुई है। उनके लिए भक्ति का अर्थ है—ईश्वर से प्रेम करना और समस्त जीवों में उसी ईश्वर का दर्शन करना। उनकी भक्ति मानव-मानव के बीच प्रेम, सहानुभूति और सद्भाव का संदेश देती है।

वे कहते हैं—

> “परहित सरिस धरम नहीं भाई,
> पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।”

यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि तुलसीदास की भक्ति सामाजिक और नैतिक मूल्यों से जुड़ी हुई है।

### भक्ति और लोकमंगल

तुलसीदास की भक्ति लोकमंगल की भावना से ओत-प्रोत है। वे भक्ति को केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन नहीं मानते, बल्कि समाज के कल्याण का माध्यम भी मानते हैं। रामचरितमानस में उन्होंने राजा, प्रजा, परिवार और समाज—सभी के आदर्श प्रस्तुत किए हैं।

उनकी भक्ति जनता को भय, अज्ञान और नैतिक पतन से बाहर निकालने का प्रयास करती है। सरल भाषा (अवधी) में रचना कर उन्होंने भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। यही कारण है कि उनकी भक्ति आज भी गाँव-गाँव में जीवित है।

### निर्गुण भक्ति से संबंध

यद्यपि तुलसीदास सगुण भक्ति के उपासक थे, फिर भी उन्होंने निर्गुण भक्ति का विरोध नहीं किया। वे मानते थे कि सगुण और निर्गुण दोनों ही एक ही परम सत्ता के रूप हैं। उनके अनुसार निर्गुण ईश्वर को समझना कठिन है, इसलिए सामान्य जन के लिए सगुण रूप अधिक उपयुक्त है।

> “अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा।”

इस प्रकार तुलसीदास की भक्ति समन्वयवादी है, जो विभिन्न भक्ति धाराओं को जोड़ती है।

### भक्ति और विनय

तुलसीदास की भक्ति में **विनय** का विशेष स्थान है। विनय-पत्रिका में उनकी आत्मसमर्पण की भावना अत्यंत मार्मिक रूप में प्रकट हुई है। वे स्वयं को पापी, दीन और असहाय मानकर ईश्वर की शरण में जाते हैं। यह विनय भाव उनकी भक्ति को और अधिक प्रभावशाली बनाता है।

> “अब नाथ करहु करुना बिलोकि।”

यह पंक्ति भक्त और भगवान के बीच आत्मीय संबंध को दर्शाती है।

भक्ति **और नैतिक आदर्श**

तुलसीदास की भक्ति नैतिक मूल्यों से जुड़ी हुई है। वे सत्य, धर्म, कर्तव्य, मर्यादा और संयम को अत्यंत महत्व देते हैं। राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत कर उन्होंने भक्ति को नैतिक आचरण से जोड़ा। उनके अनुसार सच्ची भक्ति वही है जो मनुष्य को श्रेष्ठ आचरण की ओर ले जाए।

स्त्री**, शूद्र और सामान्य जन के प्रति दृष्टिकोण**

तुलसीदास की भक्ति जनसामान्य के लिए है। वे मानते हैं कि भक्ति पर किसी एक वर्ग का अधिकार नहीं है। यद्यपि उनके कुछ कथनों पर विवाद हुआ है, फिर भी संपूर्ण रूप से देखें तो उनकी भक्ति लोकजीवन से जुड़ी हुई और सबके लिए समान रूप से सुलभ है।

भाषा **और भक्ति**

तुलसीदास की भक्ति-भावना को प्रभावशाली बनाने में उनकी भाषा का बड़ा योगदान है। संस्कृत के स्थान पर अवधी जैसी लोकभाषा का प्रयोग कर उन्होंने भक्ति को आम जनता के हृदय तक पहुँचाया। सरल, सरस और भावपूर्ण भाषा उनकी भक्ति को सहज बनाती है।

तुलसीदास **की भक्ति का महत्व**

तुलसीदास की भक्ति ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी। उनकी भक्ति आज भी धार्मिक अनुष्ठानों, रामलीला, कथा-वाचन और भजन-कीर्तन में जीवित है। उन्होंने भक्ति को जीवन से जोड़ा, न कि केवल मंदिरों तक सीमित रखा।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि तुलसीदास की भक्ति-भावना भारतीय भक्ति परंपरा की अमूल्य धरोहर है। उनकी भक्ति प्रेम, करुणा, विनय और लोकमंगल से परिपूर्ण है। राम के माध्यम से उन्होंने मानवता, नैतिकता और आदर्श जीवन का संदेश दिया। उनकी भक्ति आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके समय में थी। वास्तव में, तुलसीदास केवल एक कवि नहीं, बल्कि भारतीय जनमानस के आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं।